दक्ष®

10 अगस्त 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

REET Mains Exam.

Grade-3rd

Level-2

(कक्षा 6 से 8)

No. 1

अध्यापक सीधी भर्ती

शैक्षणिक मनोविज्ञान एवं सूचना तकनीकी

(Educational Psychology & Information Technology)

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 30 अंक सुनिश्चित करें

For Section-V • Marks-20 ● For Section-VI • Marks-10

Special Features

- सूचना तकनीकी (IT) का विस्तृत विवरण
- शैक्षणिक/शिक्षा मनोविज्ञान के संप्रत्ययों की सरल एवं सारगर्भित भाषा में व्याख्या
- विषय-वस्तु का चित्र एवं तालिकाओं द्वारा स्पष्टीकरण
- NCERT, BSER एवं प्रामाणिक पुस्तकों पर आधारित

Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

डॉ. सुभाष यादव • डॉ. पंकज यादव • संतोष यादव

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

पाठ्यक्रम

राजस्थान प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक सीधी भर्ती प्रतियोगी परीक्षा

Teacher (Grade-III)

Level-I & Level-II

(for Class 1 to 5 and Class 6 to 8)

SECTION-'5' — **Marks-20**

• शैक्षणिक मनोविज्ञान •

[Educational Psychology]

- **शैक्षिक मनोविज्ञान :** अर्थ, क्षेत्र एवं कार्य [**Educational Psychology:** Meaning, Scope & Functions]
- **बाल विकास :** अर्थ, बाल विकास के सिद्धान्त एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक [**Child Develpment :** Meaning, Principles of Child Development & Factors Influencing Development]
- **बाल विकास में वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव** [**Effect of Heredity & Environment in Child Development**]
- **व्यक्तित्व :** संकल्पना, प्रकार, व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक और व्यक्तित्व मापन [**Personality :** Concepts, Types, Factors Affecting Personality & Meausrement of Personality]
- **बुद्धि :** संकल्पना, विभिन्न बुद्धि सिद्धान्त एवं मापन [**Intelligence :** Concepts, Various Theories & Measurement]
- **अधिगम का अर्थ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक** [**Meaning of Learning & Factors Affecting Learning**]
- **अधिगम के विभिन्न सिद्धान्त** [**Various Theories of Learning**]
- **अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाएँ** [**Various Processes of Learning**]
- **विविध अधिगमकर्ता के प्रकार :** पिछड़े, विमंदित, प्रतिभाशाली, सर्जनशील, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी इत्यादि। [**Diverse Learners :** Backward, Mentally Retarded, Gifted, Creative, Special Need Students etc.]
- **अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ** [**Learning Difficulties**]
- **अभिप्रेरणा एवं अधिगम में इसका प्रभाव** [**Motivation & Its Role in Learning**]
- **समायोजन की संकल्पना, तरीकें एवं समायोजन में अध्यापक की भूमिका** [**Concept of Adjustment, Methods of Adjustment & Role of Teacher in Adjustment**]

SECTION-'6' — **Marks-10**

• सूचना तकनीकी •

[Information Technology]

- **सूचना प्रौद्योगिकी के आधार** [**Fundamentals of Information Technology**]
- **सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण (टूल्स)** [**Tools of Information Technology**]
- **सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग** [**Applications of Information Technology**]
- **सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव** [**Social Impacts of Information Technology**]

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

Section-'5' शैक्षणिक मनोविज्ञान [Educational Psychology] 1–198

1 मनोविज्ञान से परिचय [Introduction to Psychology] 1–6

- ❖ मनोविज्ञान का क्रमिक विकास 1
- ❖ मनोविज्ञान का आधुनिक स्वरूप तथा परिभाषाएँ 2
- ❖ मनोविज्ञान के लक्ष्य 3
- ❖ मनोविज्ञान के सम्प्रदाय 3
- ❖ मनोविज्ञान की शाखाएँ 4
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 5

2 शिक्षा मनोविज्ञान [Educational Psychology] 7–17

- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ 7
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति 8
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र 8
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता, महत्त्व एवं कार्य 9
- ❖ अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता, महत्त्व एवं निहितार्थ 10
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ 11
- ❖ प्रमुख विचारक, मनोवैज्ञानिक तथा उनका शिक्षा में योगदान 13
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 15

3 बाल विकास [Child Development] 18–65

- ❖ विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ 18
- ❖ विकास की विशेषताएँ 19
- ❖ वृद्धि एवं विकास में अंतर 20
- ❖ परिपक्वता 21
- ❖ विकास को प्रभावित करने वाले कारक 21
- ❖ प्रकृति एवं पोषण विवाद 25
- ❖ विकास के नियम/सिद्धांत 25
- ❖ विकास के प्रकार एवं आयाम 28
- ❖ विकास की अवस्थाएँ 51
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 55

4 व्यक्तित्व [Personality] 66–83

- ❖ व्यक्तित्व : अर्थ एवं परिभाषाएँ 66
- ❖ व्यक्तित्व की विशेषताएँ 67
- ❖ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक 67
- ❖ व्यक्तित्व अध्ययन के प्रमुख उपागम एवं सिद्धांत 67
- ❖ नव फ्रॉयडवादी/पश्च फ्रायडवादी 74
- ❖ व्यक्तित्व का मापन/मूल्यांकन 75
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 79

5 वैयक्तिक विभिन्नताएँ [Individual Differences] 84–87

- ❖ वैयक्तिक विभिन्नताएँ : अर्थ एवं परिभाषाएँ 84

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

- वैयक्तिक विभिन्नता के प्रकार 84
- वैयक्तिक विभिन्नता के कारण 85
- वैयक्तिक विभिन्नताओं के अध्ययन/मापन की विधिया 86
- वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन का शिक्षा में महत्त्व 86
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 86

6 बुद्धि [Intelligence] 88–107

- बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषाएँ 88
- बुद्धि के प्रकार 89
- बुद्धि के सिद्धांत 90
- बुद्धि का मापन 99
- बुद्धि लब्धि 100
- बुद्धि परीक्षण 100
- प्रमुख भारतीय बुद्धि परीक्षण 103
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 104

7 सांवेगिक/संवेगात्मक बुद्धि [Emotional Intelligence] 108–112

- सांवेगिक बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषाएँ 108
- संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिरूप/मॉडल 108
- संवेगात्मक/सांवेगिक बुद्धि के तत्त्व 110
- संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्त्व 110
- संवेगात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक 111
- संवेगात्मक बुद्धि का मापन 111
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 111

8 अधिगम/सीखना [Learning] 113–153

- अधिगम : अर्थ एवं परिभाषाएँ 113
- अधिगम के अनुक्षेत्र 114
- अधिगम के प्रकार 115
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक 116
- सीखने/अधिगम की विधियाँ 117
- अधिगम के सिद्धांत 117
- अधिगम स्थानांतरण 142
- अधिगम वक्र 145
- अधिगम में पठार 146
- महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 146

9 विशेष आवश्यकता वाले बालक/विविध अधिगमकर्ता [Children with Special Needs/Diverse Learners] 154–176

- अर्थ एवं परिभाषाएँ 154
- विशेष आवश्यकता वाले बालकों/विशिष्ट बालकों की विशेषताएँ 154
- विशेष आवश्यकता वाले/विशिष्ट बालकों के प्रकार 155
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 169

10 अभिप्रेरणा/प्रेरणा [Motivation] 177–188

- अभिप्रेरणा : अर्थ एवं परिभाषाएँ 177
- अभिप्रेरणात्मक चक्र 177

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

- अभिप्रेरक 179
- अभिप्रेरणा के सिद्धांत 180
- अभिप्रेरणा का मापन 184
- अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका 184
- कक्षा परिस्थितियों में अभिप्रेरित करने के उपाय 184
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 185

11 मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन [Mental Health & Adjustment] .. 189–198

- मानसिक स्वास्थ्य : अर्थ एवं परिभाषाएँ 189
- मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक 190
- समायोजन 190
- कुसमायोजन 191
- समायोजन से सम्बन्धित समस्याएँ 191
- कुसमायोजन से बचने के उपाय 192
- समायोजन प्रक्रिया में अध्यापकों का योगदान समायोजन स्थापित करने में अध्यापकों का योगदान .. 194
- मानसिक स्वास्थ्य का संवर्द्धन 194
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 195

Section-'6' सूचना तकनीकी [Information Technology] 199–266

1 सूचना प्रौद्योगिकी के आधार [Fundamentals of Information Technology (IT)] 199–209

- सूचना प्रौद्योगिकी : अर्थ एवं परिभाषाएँ 199
- सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता 200
- सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षा में नवाचार 204
- सूचना प्रौद्योगिकी की मूलभूत अवधारणाएँ 200
- शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्त्व 201
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 209

2 सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरण [Tools of Information Technology] 210–251

- सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरण 210
- कम्प्यूटर की पीढ़ियाँ 211
- इनपुट एवं आउटपुट डिवाइसेज 216
- ऑफलाइन इनपुट डिवाइस 221
- सॉफ्टवेयर का वर्गीकरण 225
- ऑपरेटिंग सिस्टम से सम्बन्धित शब्दावली 233
- कम्प्यूटर मेमोरी 235
- कम्प्यूटर नेटवर्क एवं इंटरनेट 240
- Full Forms 247
- कम्प्यूटर परिचय 211
- कम्प्यूटर की आधारभूत कार्यप्रणाली 214
- स्मार्ट कार्ड रीडर/रिकॉग्निशन 220
- हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर (ऑपरेटिंग सिस्टम) 224
- माइक्रोसॉफ्ट विण्डोज के गुणधर्म 229
- सिस्टम कॉल 234
- मेमोरी का वर्गीकरण 237
- इंटरनेट 243
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 247

3 सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग [Applications of Information Technology] ... 252–257

- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 257

4 सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव [Social Impacts of Information Technology] 258–266

- सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव से सम्बन्धित कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण आयाम 260
- सोशल मीडिया 262
- सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 263
- राजस्थान में सूचना प्रौद्योगिकी तथा ई-गवर्नेंस 263
- राजस्थान में ई-गवर्नेंस हेतु महत्त्वपूर्ण कदम 263
- राजस्थान-सूचना प्रौद्योगिकी एक नज़र में 264
- परीक्षापयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य 265
- महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 265

1 मनोविज्ञान से परिचय [Introduction to Psychology]

- मनोविज्ञान का अध्ययन प्रारंभ में दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में किया जाता था।
- आरंभिक काल में मनोविज्ञान का अध्ययन इसके ग्रीक (Greek) अर्थ के अनुसार ही किया जाता था, यथा–मनोविज्ञान अंग्रेजी शब्द **'साइकोलॉजी'** (Psychology) का हिंदी रूपांतरण है तथा **'साइकोलॉजी'** (Psychology) शब्द दो ग्रीक शब्दों **'साइकी'** (Psyche) एवं **'लॉगोस'** (Logos) से मिलकर बना है, जिसमें साइकी (Psyche) का अर्थ आत्मा और लॉगोस (Logos) का अर्थ अध्ययन या विज्ञान है।
- इस प्रकार प्रारम्भ में मनोविज्ञान का आत्मा के विज्ञान के रूप में अध्ययन किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में मनोविज्ञान का यह अर्थ प्रासंगिक नहीं है।

मनोविज्ञान का क्रमिक विकास
(Successive Development of Psychology)

- वर्तमान में मनोविज्ञान का जो स्वरूप हमारे सामने है वह लंबे समय के क्रमिक विकास का परिणाम है। समय के साथ–साथ मनोविज्ञान के क्षेत्र व स्वरूप में गुणात्मक तथा विकासात्मक परिवर्तन आए। मनोविज्ञान के स्वरूप में परिवर्तन आने के साथ–साथ इसकी विषय–वस्तु में भी परिवर्तन आए तथा विषय–वस्तु के आधार पर मनोविज्ञान की परिभाषाओं में भी परिवर्तन आया।

मनोविज्ञान (Psychology) के परिवर्तित स्वरूप को निम्नलिखित चार अवस्थाओं/चरणों के माध्यम से समझा जा सकता है—

1. प्रथम अवस्था-आत्मा के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (First Stage-Psychology as the Study of Soul)

- 16वीं शताब्दी तक दार्शनिक मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानते थे, तब मनोविज्ञान का उद्देश्य आत्मा की खोज करना और इसकी व्याख्या करना था।
- इस मत के प्रमुख समर्थक **देकार्त, प्लेटो** एवं **अरस्तू** थे।
- 16वीं शताब्दी के अंत में इस मत को अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि ना तो आत्मा का स्वरूप स्पष्ट है, ना ही इसके अस्तित्व के कोई ठोस सबूत हैं और ना ही इसके अध्ययन के कोई निर्धारित मानक (Norms) हैं।

2. द्वितीय अवस्था-मन के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Second Stage-Psychology as the study of Mind)

- 17वीं शताब्दी तथा 18वीं शताब्दी के अंत तक मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में पढ़ा गया।
- इस मत के प्रमुख समर्थक — **काँट, पम्पोनॉजी, हॉब्स, लॉक** आदि थे।
- 18वीं शताब्दी के अंत तक इस मत को भी अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि मन का न तो स्पष्ट अर्थ एवं स्वरूप है और ना ही इसके अध्ययन का कोई स्पष्ट तरीका।

3. तृतीय अवस्था-चेतना के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Third Stage-Psychology as the study of Consciousness)

- 19वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान (Science of Consciousness) के रूप में पढ़ा जाने लगा।
- इसी अवस्था में मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र विषय के रूप में उत्पत्ति हुई जब 1879 ई. में **विलियम वुंट** ने जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम औपचारिक प्रयोगशाला की स्थापना की।
- विलियम वुंट के अलावा इस मत के प्रमुख समर्थकों में प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक **विलियम जेम्स** थे जिन्होंने 1890 ई. में मनोविज्ञान की प्रसिद्ध पुस्तक **'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी'**

4 व्यक्तित्व [Personality]

व्यक्तित्व : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Personality : Meaning and Definitions)

- व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द 'पर्सनलटी' (Personality) का हिंदी रूपांतरण है एवं पर्सनलटी शब्द लैटिन भाषा के शब्द पर्सोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ मुखौटा/नकाब (Mask) होता है, जिसे नायक/अभिनेता नाटक करते समय पहनते हैं।
- इस प्रकार शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी वेशभूषा तथा दिखावे से है, लेकिन शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं होती है।
- वर्तमान समय में व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व एवं आंतरिक व्यक्तित्व दोनों को सम्मिलित किया जाता है।
- व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य दिखावे अर्थात शारीरिक गठन एवं आंतरिक गुणों एवं योग्यताओं को सम्मिलित किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक शब्दों में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके माध्यम से व्यक्ति अन्य व्यक्तियों और स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करता है।
- व्यक्तित्व के अध्ययन की सहायता से लोग सरलता से इस बात का वर्णन कर सकते हैं कि व्यक्ति किस तरह से विभिन्न स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करते हैं।
- कुछ शब्द जैसे—शर्मीला, संवेदनशील, शांत, गंभीर, स्फूर्तिवान इत्यादि का प्रयोग सामान्यत: व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए किया जाता है। ये शब्द व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों को इंगित करते हैं, इस अर्थ में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन अनन्य एवं सापेक्षित रूप से स्थिर गुणों से है जो एक समयावधि में विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को विशिष्टता प्रदान करते हैं।
- **ऑलपोर्ट** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''
- **आइजेंक** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्त-प्रकृति, ज्ञान-शक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थाई एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।''
- **आर.बी. कैटल** के अनुसार, ''व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा?''
- **वॉटसन** के अनुसार, ''विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में जो भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार का जो भी रूप पाया जाता है उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।''
- **चाइल्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व से तात्पर्य स्थायी आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।''
- **वुडवर्थ** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।''
- **गिलफोर्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के उस एकीकृत तथा गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।''
- **बिग** तथा **हंट** के अनुसार ''व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान तथा इसकी समस्त विशेषताओं के योग को व्यक्त करता है।''

व्यक्तित्व से संबंधित शब्द

- **स्वभाव**—जैविक रूप से आधारित प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट तरीका।
- **विशेषक या शीलगुण**—व्यवहार करने का स्थिर, सतत एवं विशिष्ट तरीका।
- **स्ववृत्ति**—किसी स्थिति विशेष में विशिष्ट तरीके से प्रतिक्रिया करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।
- **चरित्र**—नियमित रूप से घटित होने वाले व्यवहार का समग्र प्रतिरूप।
- **आदत**—व्यवहार करने का अत्यधिगत ढंग।
- **मूल्य**—लक्ष्य और आदर्श जो महत्वपूर्ण और उपलब्धि के योग्य माने जाते हैं।

(स्रोत : NCERT)

7 सांवेगिक/संवेगात्मक बुद्धि [Emotional Intelligence]

सांवेगिक बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Emotional Intelligence : Meaning and Definitions)

- **'सांवेगिक बुद्धि'** (Emotional Intelligence) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1990 में दो अमेरिकन प्रोफेसर्स डॉ. जॉन मेयर तथा डॉ. पीटर स्लोवे द्वारा किया गया।
- डॉ. जॉन मेयर तथा पीटर स्लोवे ने प्रसिद्ध पुस्तक 'संवेगात्मक विकास एवं संवेगात्मक बुद्धि' (Emotional Development and Emotional Intelligence) लिखी तथा इस पुस्तक में ही सर्वप्रथम संवेगात्मक बुद्धि नामक 'शब्द' का प्रयोग किया।
- संवेगात्मक बुद्धि के संप्रत्यय (Concept) को प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय बनाने का श्रेय अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को जाता है।
- **डेनियल गोलमैन** ने 1995 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''संवेगात्मक बुद्धि : बुद्धिलब्धि से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों'' (Emotional Intelligence: Why it can matter more than I.Q.) के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धि को प्रसिद्धि दिलाई।
- डेनियल गोलमैन की इस पुस्तक को 'संवेगात्मक बुद्धि' (Emotional Intelligence) नाम से भी जाना जाता है।
- 'संवेगात्मक बुद्धि' (Emotional Intelligence) दो शब्दों, 'संवेगात्मक' (Emotional) तथा बुद्धि (Intelligence) से मिलकर बना है। संवेगात्मक शब्द का संबंध संवेगों (Emotions) से है तथा बुद्धि (Intelligence) का संबंध संज्ञानात्मक क्षमता/मानसिक क्षमता से होता है, अत: संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य संवेगों का सही ढंग से नियंत्रण एवं नियमन करने की संज्ञानात्मक क्षमता से है।
- 'संवेगात्मक बुद्धि' संवेगों को समझने, अभिव्यक्त करने तथा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उनका प्रबंधन करने की योग्यता है, इसमें व्यक्ति की स्वयं के संवेगों तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने व प्रबंधन करने की समग्र योग्यता समाहित रहती है।
- व्यक्ति अपनी इस योग्यता का प्रयोग करके विचार प्रक्रिया के माध्यम से अपने व दूसरों के संवेगों को जानने व समझने के साथ-साथ उनकी इस प्रकार से अभिव्यक्ति करता है कि उसके लक्ष्य की प्राप्ति संभव हो सके तथा वह नवीन परिस्थितियों में अपना सही ढंग से समायोजन कर सके।
- व्यापक अर्थों में संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उन कौशलों, अभिवृत्तियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं के समुच्चय से है जो व्यक्ति के व्यवहार, समस्याओं के समाधान के तरीकों तथा संप्रेषण कौशल को निर्धारित करती है। वस्तुत: ये कारक व्यक्ति की सफलता पाने, संतुष्टि प्राप्त करने, अन्य व्यक्तियों से संबंध बनाने, तनाव से निपटने की क्षमता, स्व-प्रबंधन करने, प्रत्यक्षण के नियंत्रण तथा मानसिक एवं संवेगात्मक स्वास्थ्य को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।
- **मेयर एवं स्लोवे** के अनुसार, ''संवेगात्मक बुद्धि संवेगों की प्रत्यक्षण की क्षमता, संवेगों के प्रति पहुँच बनाने एवं उसे उत्पन्न करने की क्षमता है ताकि चिंतन में मदद हो सके, संवेग एवं संवेगात्मक ज्ञान को समझा जा सके एवं संवेग को चिंतनशील ढंग से नियमित किया जा सके जिससे संवेगात्मक एवं बौद्धिक वर्धन को उन्नत बनाया जा सके''।
- **डेनियल गोलमैन** के अनुसार, ''संवेगात्मक बुद्धि अपने एवं दूसरे के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करके एवं अपने और अपने संबंधों में संवेगों को प्रबंधित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धिलब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णत: संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परंतु उसके पूरक होते हैं।''
- **रुयूदेन बॉर-ऑन** ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा कि, ''संवेगात्मक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परावर्तित होती है, जिसके माध्यम से प्रतिदिन की पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है और जो व्यक्ति की जिंदगी में जिसमें पेशेवर तथा व्यक्तिगत धंधा भी सम्मिलित है सफलता प्राप्त करने में मदद करती है।

संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिरूप/मॉडल
(Models of Emotional Intelligence)

- संवेगात्मक बुद्धि के मुख्यतया तीन प्रारूप मॉडल या निदर्श हैं—
  I. योग्यता प्रारूप (Ability Model)
  II. शीलगुण प्रारूप (Trait Model)
  III. मिश्रित प्रारूप (Mixed Model)

1 सूचना प्रौद्योगिकी के आधार [Fundamentals of Information Technology (IT)]

सूचना प्रौद्योगिकी : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Information Technology : Meaning and Definitions)

- सूचना प्रौद्योगिकी (IT) को सूचना तकनीकी (Information Technology) तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी (Information and Communication Technology : ICT) इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है।
- सूचना तकनीकी (Information Technology) कम्प्यूटर तकनीकी (Computer Technology) एवं सम्प्रेषण तकनीकी (Communication Technology) का संयुक्त रूप है।
- शिक्षा से मनोरंजन तक, घर से व्यवसायों तक, अस्पतालों से लेकर कारखानों तक ऐसे कई क्षेत्र हैं जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी के इस बहुमुखी तथा बहुपयोगी आविष्कार ने मानव जीवन में क्रांति ला दी है।
- 21वीं सदी सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के विकास की सदी है तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी ने आज सम्पूर्ण विश्व को एक वैश्विक गाँव (Global Village) में परिवर्तित कर दिया है।

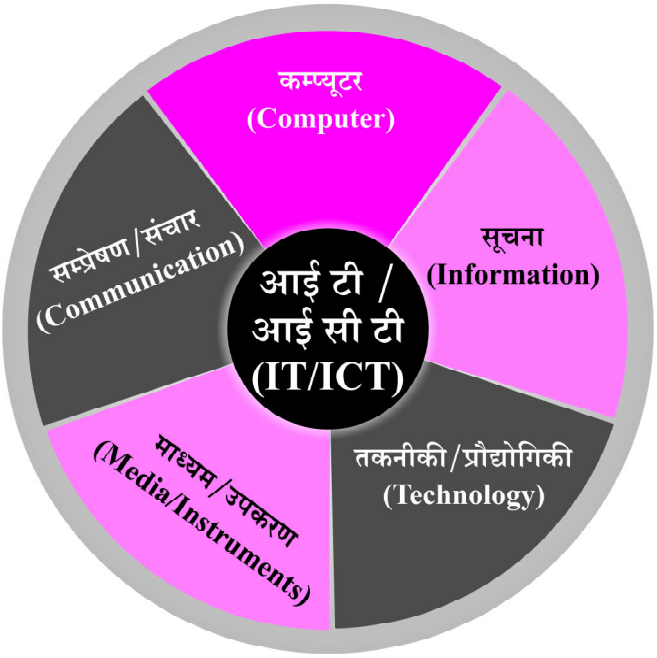

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ तकनीकी/प्रौद्योगिकी के माध्यम से **भावों, विचारों, संदेशों, सूचनाओं, ज्ञान और उपलब्धियों आदि का आदान-प्रदान (Exchange) करना** है।

इस व्यवस्था का संचालन करना सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत आता है अर्थात् सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का आशय उस व्यवस्था से है, जो कि सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रेषित करने में अपना योगदान प्रस्तुत करती है।

- IT पर आधारित शिक्षण में **विद्यार्थी केन्द्रित** अधिगम स्थिति को महत्व दिया जाता है।
- **संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट** (United Nations Report 1999) के अनुसार, ICT के अन्तर्गत इंटरनेट सेवा-सुविधाएँ, दूरसंचार संसाधन तथा सेवाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) संसाधन तथा सेवाएँ, मीडिया तथा प्रसारण, पुस्तकालय तथा प्रलेखीकरण (Documentation) केन्द्र, व्यवसायिक सूचना प्रदानकर्त्ता, नेटवर्क पर आधारित सूचना सेवाएँ तथा दूसरी सूचना संप्रेषण गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।
- **यूनेस्को** (UNESCO-2002) के अनुसार, सूचना तथा संप्रेषण तकनीक (ICT) को सूचना तकनीक (Information Technology) की दूसरी संबंधित तकनीक से संयोजन के रूप में समझा जाना चाहिये, विशेषतः सम्प्रेषण तकनीक (Communication -Technology) से।
- सूचना प्रौद्योगिकी (IT), उपकरणों का एक ऐसा संयोग है, जो इलेक्ट्रोनिक माध्यमों का प्रयोग करते हुए, सूचना की रचना, सुधार, पुनः प्राप्ति (Retrieval) भण्डारण एवं संप्रेषण में सहायता करता है।
- इस प्रकार, सूचना प्रौद्योगिकी में **कम्प्यूटर** एवं **संप्रेषण तकनीकी** (Computing & Communication Technology) को शामिल किया जाता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न पक्ष- हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, सम्बद्धता (Connectivity), दूर संचार (Tele-Communication), विज्ञान व मानव-कम्प्यूटर इंटरफेस (Human-Computer Interface) इत्यादि हैं।

3 सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग [Applications of Information Technology]

❖ सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण क्रांति लेकर आई है। सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे हम आर्थिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य के रूप में ई-कॉमर्स इंटरनेट द्वारा डाक भेजना, ई-मेल, ऑनलाईन सरकारी कामकाज विषयक ई-शासन, ई-बैंकिंग द्वारा बैंक व्यवहार, ऑनलाइन शिक्षा सामग्री के लिए ई-एजुकेशन (E-Education) आदि माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के बहु-आयामी उपयोग के कारण विकास के नये द्वार खुल रहे हैं।

❖ भारत में सूचना-प्रौद्योगिकी का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रयोग एवं अनुसंधान करके विकास की गति को बढ़ाया गया है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

❖ सूचना प्रौद्योगिकी से सूचना, आँकड़े (Data) तथा ज्ञान का आदान-प्रदान मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में फैल गया है।

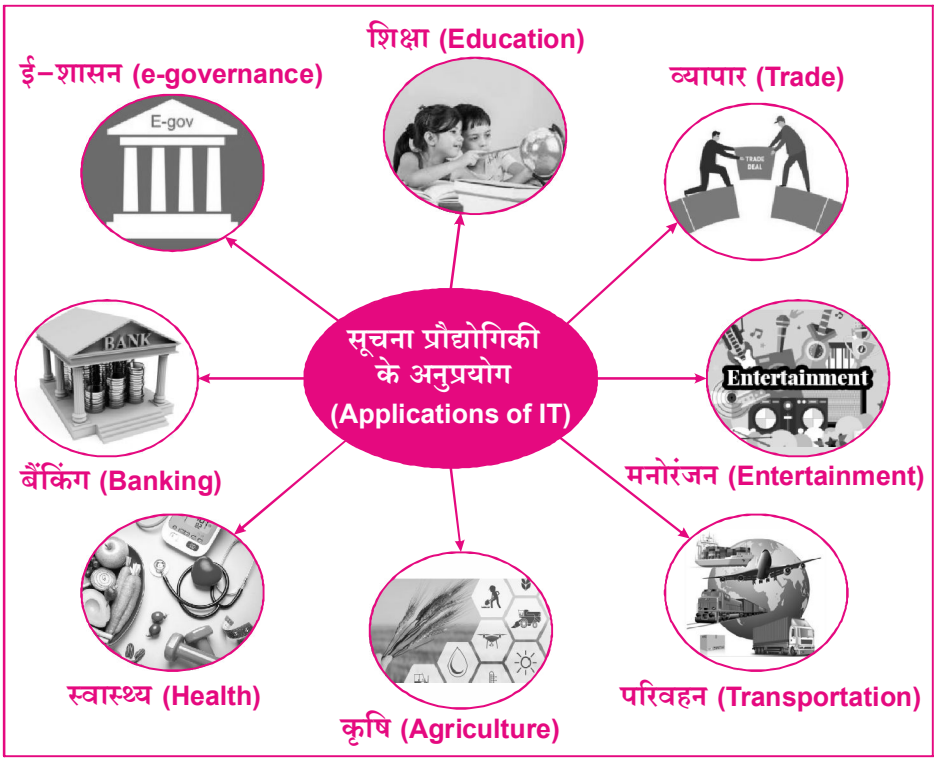

❖ इलेक्ट्रॉनिक तथा डिजिटल उपकरणों की सहायता से इस क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि हो रही हैं। आर्थिक उदारतावाद के इस दौर में वैश्विक गाँव (Global Village) की संकल्पना संचार प्रौद्योगिकी के कारण सफल हुई है।

❖ सूचना तकनीकी के माध्यम से ई-कॉमर्स, ई-मेडिसिन, ई-एजुकेशन, ई-गवर्नेंस, ई-बैंकिंग, ई-शॉपिंग आदि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का विकास हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी आज शक्ति एवं विकास का प्रतीक बन गयी है।

सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग (Applications of Information Technology)

सूचना तकनीकी का प्रयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रमुखतः हो रहा है— (स्रोत : BSER)

I. ई-शासन (E-Governance)

❖ ई-शासन (E-Governance) को ई-सरकार (E-Government), डिजिटल सरकार (Digital Government), ऑनलाइन सरकार (On-line Government) या संबद्ध सरकार (Connected-Government) के नाम से भी जाना जाता है।

❖ आम नागरिकों, कारोबारियों तथा कर्मचारियों के लाभ के लिए तकनीकों के उपयोग के माध्यम से सरकारी सेवाओं की पहुँच (Access) तथा निष्पादन (Delivery) को बढ़ावा देने की प्रक्रिया को ई-शासन कहते हैं।

❖ ई-शासन, आम नागरिकों को इलेक्ट्रोनिक माध्यम से सरकार के साथ अंतः क्रिया (Interaction) कर आवश्यक सेवा लेने की सुविधा प्रदान करता है।

❖ ई-मेल एवं इंटरनेट के माध्यम से आम जनता की शासन में भागीदारी को बढ़ावा देना तथा शासन को सुगम एवं सरल बनाना ई-शासन का अंतिम लक्ष्य है।

लेखक परिचय

डॉ. सुभाष यादव

डॉ. सुभाष यादव का जन्म शाहपुरा (जयपुर) में हुआ। इन्होनें अपनी शिक्षा-दीक्षा राजस्थान के विभिन्न अंचलों में रहकर प्राप्त की। आपने विद्यालयी शिक्षा प्रतापगढ़, अलवर एवं शाहपुरा से प्राप्त की। राजस्थान कॉलेज जयपुर से स्नातक किया, मनोविज्ञान विभाग (राजस्थान विश्वविद्यालय) से परास्नातक तथा **Ph.D.** की उपाधि प्राप्त की इसके साथ ही **NET/SET** परीक्षा उत्तीर्ण की। लेखक के शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकें हैं।

आप पूर्व में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन उप-निरीक्षक पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके है तथा वर्तमान में 'बाबा गंगादास राजकीय महिला महाविद्यालय' शाहपुरा (जयपुर) में मनोविज्ञान (**Psychology**) विषय के अध्यापन कार्य में संलग्न है।

डॉ. पंकज यादव

डॉ. पंकज यादव का जन्म अलवर जिले की बहरोड़ तहसील के ग्राम कालियाहोडा में हुआ। आप प्रारम्भिक समय से ही मेधावी छात्रा रही है, आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान विषय से **M.A.** एवं **Ph.D.** की उपाधि प्राप्त की है।

आप विगत **7** वर्षों से पाठशाला, आलोकन, विनायक, विद्यांजली, आरम्भ, मंथन, शिवालय, लक्ष्य आदि शिक्षण संस्थाओं में ऑफलाइन एवं ऑनलाइन अध्यापन करवा रही है।

संतोष यादव

श्रीमती संतोष यादव का जन्म मनोहरपुर (जयपुर) में हुआ। आपने विद्यालयी शिक्षा मनोहरपुर से प्राप्त की तथा राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर से स्नातक एवं परास्नातक की उपाधि प्राप्त की।

आप वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजसमंद में वरिष्ठ अध्यापिका के पद पर कार्यरत है।

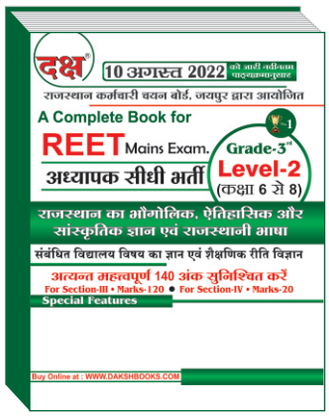

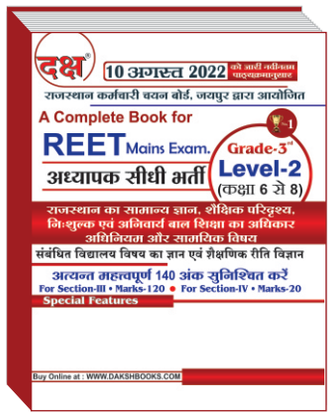

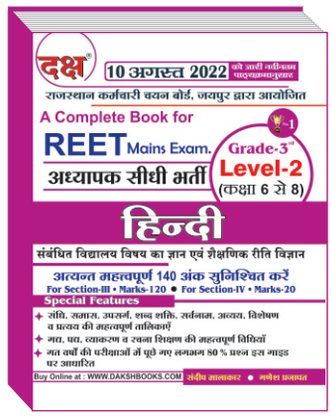

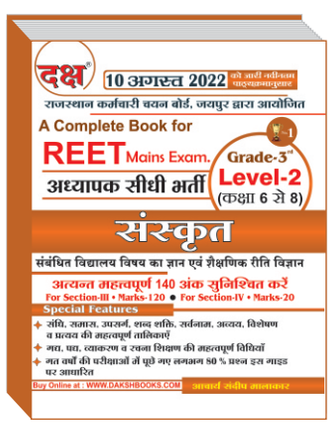

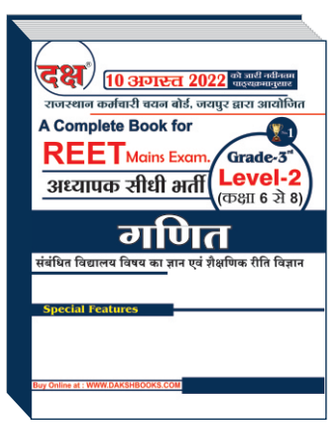

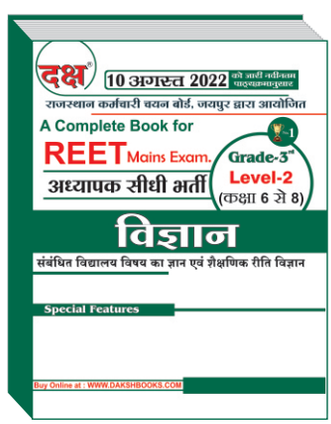

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-636 | ₹ 480/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

WWW.DAKSHBOOKS.COM

पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★